7 + हिंदी

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

मुकद्दमा

इस्लामिक स्टडीस दर असल नौ न्नाहालन उम्मत की एक मांग थी जो अल्लाह के फज़ल और तौफीख से पाए तकमील को पहुंची| बिला शक व शुबा ये किताब हर घर और हर फर्द की ज़रुरत है| अल्लाह ताला इस अमल मुतवाज़ेह को क़ुबूल फरमाये|

मराहिल नज़रिया, निसाब :

दीन ए इस्लाम बहुत ही आसन और खैर ख्वाही पर मबनी दीन है, लेकिन इसके बावजूद जदीद नसल अपने दीन से दूर होती जा रही है| हमारी ये ख्वाहिश थी के आसान फहम अंदाज़ में बच्चों तक इल्म ए दीन पहुँचायें| इसी मकसद के पेशे नज़र अलहम्दु लिल्लाह ये दीनी निसाबी किताबी सिलसिला शुरू किया गया है|

मराहिल तय्यारी निसाब :

ऐसी किताब की ज़रुरत थी जिसमे कुरआन ए मजीद की मुख्तसर सूरतों, छोटी छोटी और जामे अहादीस, किसस, नसीहतों, आदाब व अज्कार और साथ ही तजवीद के कवायिद से जिस किताब को मज़ीन किया गया हो|

ये किताबी सिलसिला बच्चों की उमर के लेहाज़ से तरतीब दिया गया है| पहले मरहले में पाँच त नौ साल के बच्चों के लिए तालीमात देने को तरतीब दिया गया| इन शा अल्लाह इस सिरीज़ को 23 + तक ले जाने का इरादा है|

ये किताब किस के लिए :

इन शा अल्लाह इस सिरीज़ से मंदरजा ज़ेल शोबे व अफराद इस्तेफ़ादा हासिल कर सकते है :

1. **ये किताब न सिर्फ बच्चों बलके हर किसम के अफराद के लिए मुफीद है जो इस्लामी तालीमात सीखने की बेहतरीन शुरुआत करना चाहते है|**
2. **डाक्टर्स के लिए भी मुफीद है जो नबवी तालीमात की रौशनी में नबवी तर्ज़े ज़िन्दगी अपना कर सहत्मंद ज़िन्दगी आम करना चाहते है|**
3. **ये किताब टीचर्स के लिए बड़ी मुफीद है, जो दर्स के दौरान बच्चों को दीनी आदाब सिखाना चाहते है|**
4. **ये किताब उन स्कालर्स व दुआत के लिए जो हवाले देने का एहतेमाम करते है काफी मुफीद है क्यों के इसमें बुनयादी तालीमात हवालों के साथ मौजूद है|**

5. ये किताब सोशल वरकर्स के लिए भी मुफीद है जो नबवी तालीमात के ज़रिये समाज में सुधार लाना चाहते है|
6. ये किताब पोलिस और वुकला के लिए भी ज़रूरी है जो जरायेम की रोकथाम करना चाहते है| इसका बेहतरीन तरीका ये है के नबवी तालीमात को आम कर दिया जाये|
7. बूढ़े हज़रात जिन्होंने अब तक शुरुआत न की हो लेकिन retirement age बाद बेहतरीन शुरुआत करना चाहते है, ये किताब उनके हक में भी काफी मुफीद है|
8. रीसर्च स्कालार्स के लिए जो बच्चों की तरबियत का एहतेमाम करते है|
9. सैकालजिस्ट के लिए जो बच्चों की सैकालजी पढ़ना चाहते है|
10. मुस्लिहीन व मुकातिब के मुदीर व मस्जिद के मुहतमीन जो बच्चो के लिए सबाही व मसाही हल्खे खायम करते है, इनके लिए ये सिरीज़ syllabus की हैसियत रखती है|
11. असरी इस्लामिक स्कूल के लिए उमर के ऐतेबार से classes में रखा जा सकता है|
12. सेक्युलर स्कूल्स में मसाई हल्खे के लिए|
13. इस्लामी मदारिस के लिए भी मुफीद है|
14. खतीब हज़रात जो कम वक़्त में अहादीस के सही हवाले नक़ल करना चाहते हो|
15. घरों में मायें जो खुद याद करना और बच्चों को याद कराना चाहती हो|
16. नानी, दादी, नाना, दादा अपने नवासो और पोतो को आयत व अहादीस याद कराना चाहते हो|
17. इन शा अल्लाह ये किताब हर किस्म के लोगो पर असर करेगी|

मराहिल मराजा आम :
इस किताब की तय्यारी के बाद दीनियात के माहरीन उलमा एकराम से मुराजा कराया गया जो दीनी उलूम और बच्चो की नफ्सियात से वाकिफ है|

मराहिल मराजा ख़ास : इस किताब को मज़ीद मुन्खा और मुनज्ज़म बनाने के लिए फिर एक मरतबा खुसूसी मराजा किया गया, जिसमे पाँच उलमा की एक कमिटी तरतीब देकर मुकम्मिल बारीकी से जाएज़ा लिया गया| कुरआन का तरजुमा, आदाब व अहादीस के हवाले जात, इस्लामी सवाल व जवाब और दीगर अनावीन पर काफी गहराई से जाएज़ा

लिया गया| उम्मीद के कोई कमी बाकी नहीं रखी गयी फिर भी ऐब से पाक तो सिर्फ अल्लाह की ज़ात है, बशर होने के नाते कुछ खामियां रह गयी हो तो इत्तेला देकर मामनू होने का मौका दे|

मराहेल तकमील :

अल्हम्दुलिल्लाह ये किताब पाए तकमील को पहूंच चुकी है| जो नए नसल को अपने दीन से करीब करने का अहम् ज़रिया बन सकती है| हम उम्मीद करते है के इस से बच्चो को खातिर ख्वाह फ़ायदा होगा| घर में इस्लामी माहौल पैदा करने में मदद मिलेगी, इन शा अल्लाह|

इस मौके पर मैं उन सब हज़रात का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिनका निसाब की तय्यारी में मुकम्मिल साथ रहा जैसे शेख अब्दुल्लाह उमरी, शेख अब्दुर रहमान उमरी मदनी, शेख नूरुद्दीन उमरी, शेख उस्मान उमरी, शेख माजिद उमरी, शेख मुजाहिद उमरी, शेख अब्दुल वासे उमरी, जनाब ज़बिउल्लाह और साथ ही बिरादर मंसूर, फहीम भाई, मुश्ताख भाई, बिरादर इमाद, नसरीन बिन्ते हसन ज़ौजह अरशद बशीर मदनी, आस्क इस्लाम पीडिया की सारी टीम, ARAS Printer और सारे मुहिसनीन वगैरह|

मैं इस मौके पर अपने मादरे इल्म जामिया दारुस सलाम उमराबाद, तमिलनाडु, इंडिया को कैसे भूल सकता हूँ जिसके साए आतिफ़त में रहकर तालीम व तरबियत पाने का हसीन मौका मिला| इसी तरह जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरह, सौदी अरब को भी फरामोश नहीं कर सकता, जिसके मज़ाब व नामवर असातेज़ा की तरबियत में ज़हन की एक एक कड़ी खुलती गयी| अल्लाह ताला हमारे और उन सब के मीज़ान हिसाब को सखील फरमा दे - आमीन| मैं दुआ गो हो के रब्बे करीम हमारी इस छोटी सी काविश को क़ुबूल फरमा ले, जदीद नसल अपने दीन से आशना हो और इस्लामी तालीमात को अपनी ज़िन्दगी में ढाल सके - आमीन|

वस्सलाम

अरशद बशीर उमरी मदनी

फउंडर एंड डैरक्टर

आस्क इस्लाम पीडिया

नोट :

1. तरबियत औलाद शरीके हयात के इंतेखाब के वक़्त से शुरू हो जाती है| यही से हुस्ने तरबियत का आग़ाज़ हो जाता है| जब सलाहियत की बुनियाद पर फैसला किया जाता है|
2. तौहीद, रिसालत और आखिरत की बुनियाद पर ही नबी ﷺ ने सहाबा एकराम और नयी नसल की तरबियत की|
3. किताब व सुन्नत फहम सहाबा एकराम की रौशनी में तरबियत की जाये|

नोट : अहादीस के मामले में अल्हम्दुलिल्लाह सहत का ख़ास ख़याल रखा गया है| जो अहादीस भी इस किताब में ज़िकर की गयी है वो सब मख्बूल (सही, हसन) ही है - अल्हम्दुलिल्लाह !

इंडेक्स

टॉपिक	पेज नं
1. सूरतें	12
2. अहादीस	29
3. आदाब और दुआयें	38
4. नसीहतें	87
5. खिसस	90
6. दीन ए इस्लाम की अहम् और बुनयादी तालीमात	97
7. तजवीद	115
8. सवालात	118
9. मुअल्लिम गैड	126

वालिदैन के लिए कुछ नसीहतें

नेक और सालेह औलाद तलब करने की दुआयें :

रब्बि हब ली मिनस्सालिहीन - (अस साफ्फात : 100)
ऐ मेरे रब ! मुझे नेक-बख्त औलाद अता फरमा|

रब्बि हब ली मिल्लदुन्क ज़ुर्रिय्यतु तय्यिबतन इन्नक समी उद दुआ - (आले इमरान : 38)
ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे अपने पास से पाकीज़ह औलाद अता फरमा, बेशक तू दुआ का सुनने वाला है|

रब्बना हब्लना मिन अज्वाजिना व ज़ुर्रिय्यतिना खुर्रत आयुन वज अल्ना लिल मुत्तकीन इमामा - (अल फुरखान : 74)
ऐ हमारे परवरदिगार ! तू हमें हमारी बीवियों और औलाद से आँखों की ठंडक अता फरमा और हमें परहेज़गारो का पेशवा बना|

रब्बिज अल्नी मुकीमस्सलाती व मिन ज़ुर्रिय्यती रब्बना तकब्बल दुआ - (इब्राहीम : 40)
ऐ मेरे पालने वाले ! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख और मेरी औलाद से भी, ऐ हमारे रब मेरी दुआ कुबूल फरमा|

अपने बच्चो को नज़रे बद और शैतान के शर से हिफाज़त में रखने के लिए ये दुआ उन पर पढ़ कर दम करें

अऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्मह, मिनकुल्ली शैतानिव व हाम्मह, व मिन कुल्लि ऐनिल लाम्मह - (सहीह बुखारी : 3371)
मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे कलीमात के ज़रीये, हर शैतान से, हर ज़हरीले कीड़े (सांप, बिच्छू वगैरा) से और हर नज़रे बद वाली आँख से|

अपनी औलाद को कतल न करें :
वला तख्तुलू औलादकुम खश्यत इम्लाख नह्नु नरज़ुकुहुम व इय्याकुम इन्न खत्लहुम कान खितअन कबीरा - (बनी इसराईल : 31)
और मुफलिसी के खौफ से अपनी औलाद को न मार डालो, उनको और तुम को हम ही रोज़ी देते है| यकीनन उनका कतल करना कबीरा गुनाह है|
व इज़ल मौऊ दतु सुइलत, बि अय्यि ज़म्बिन खुतिलत - (तक्वीर : 8)

और जब ज़िन्दा गाडी हुई लड़की से सवाल किया जायेगा के किस गुनाह की वजह से वो कतल की गयी?

छोटे बच्चो से आप ﷺ का हंसी मज़ाख करना भी साबित है

arabic text (सहीह बुखारी : 77)
महमूद बिन अर-रबी रज़िअल्लाहुअन्हु फरमाते है : मुझे याद है के एक मरतबा रसूलुल्लाह ﷺ ने एक डोल से मूह में पानी लेकर मेरे चेहरे पर कुल्ली फरमाई, और मैं उस वक़्त पाँच साल का था|

लड़कियों की खुसूसी परवरिश पर फ़ज़ीलत :
arabic text (सुनन इब्न माजह : 3669, सहीह)
उखबह बिन आमिर रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते सुना : जिस शख्स की तीन बच्चियां हो और वो साबित कदमी के साथ उन्हें मेहनत करके खिलाई पिलाई और पहनाई तो वो उसके लिए जहन्नम से रूकावट बन जाएगी|

बच्चो को नमाज़, रोज़े और दीगर इबादत की आदत डालें :

arabic text (सुनन अबू दावूद : 495, सहीह)
अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम्हारी औलाद सात साल की हो जाये तो तुम उनको नमाज़ पढने का हुकुम दो, और जब वो दस साल के हो जाये तो उन्हें इस पर (यानी नमाज़ न पढने पर) मारो, और उनके सोने के बिस्तर अलग कर दो|

arabic text (सहीह बुखारी : 1960)
रबी बिन्ते मुअव्विज़ रज़िअल्लाहुअन्हु ने कहा के फिर बाद में भी (रमजान के रोज़े की फरज़ियत के बाद) हम उस दिन रोज़ा रखते और अपने बच्चो से भी रखवाते थे| उन्हें हम ऊन का एक खिलौना देकर बहलाया रखते| जब कोई खाने के लिए रोता तो वही दे देते, यहाँ तक के इफ्तार का वक़्त आ जाता|

arabic text (सुनन नसाई : 2648)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के एक औरत ने एक बच्चे को नबी ﷺ के सामने उठाया और पूछने लगी : क्या इसका भी हज है? आप ने फ़रमाया : हाँ (इसका भी हज है) और तुम्हे इसका अज्र मिलेगा|

बच्चो को इस्लामी आदाब सिखातें रहे :

arabic text (सहीह बुखारी : 5376)

उमर बिन सलमा रज़िअल्लाहुअन्हु बयान करते है के मैं बच्चा था और रसूल ﷺ की परवरिश में था और खाते वक़्त मेरा हाथ बरतन में चारो तरफ घूमा करता| इसलिए आप ﷺ ने मुझ से फ़रमाया के बेटे ! बिस्मिल्लाह पढ़ लिया करो, दाहिने हाथ से खाया करो और बरतन में वहां से खाया करो जो जगह तुझ से नज़दीक हो| चुनाचे उसके बाद मैं हमेशा उसी हिदायत के मुताबिख खाता रहा|

मरने के बाद भी औलाद काम आने वाली है अगर उनकी अच्छी तरबियत की जाये :

arabic text (सुनन नसाई : 3681, सुनन अबू दावूद : 2880, सुनन तिरमिज़ी : 1376, सहीह)

अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : जब इन्सान मर जाता है तो उसके अमल का सिलसिला बंद हो जाता है, सिवाए तीन चीजों के : एक सद्खे जारिया है, दूसरा ऐसा इल्म है जिससे लोग फ़ायदा उठाते और तीसरा नेक व सालेह औलाद है जो उसके लिए दुआ करे|

औलाद के दरमियान इंसाफ करें :

arabic text (सुनन अबू दावूद : 3544, सुनन नसाई : 3717, सहीह)

नोमान बिन बशीर रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ किया करो, अपने बेटो के हुखूख की अदायगी में बराबरी का ख्याल रखा करो| (किसी के साथ न इंसाफी और ज्यादती न हो)|

चैप्टर 1

सूरह अल असर

सूरह अल हुमुज़ह

सूरह अल फील

सूरह खुरैश

सूरह अल माऊन

सूरह अल कौसर

सूरह अल काफिरून

सूरह अन नस्र

सूरह अल लहब

सूरह अल अस्र

1. **ज़माने की कसम|**
2. **बेशक इंसान सरासर नुक्सान में है|**
3. **सिवाए उन लोगो के जो ईमान लाये और नेक अमल किया और जिन्हों ने आपस में हक़ की वसीयत की और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की|**

सूरह अल हुमुज़ह

1. **बड़ी खराबी है हर ऐसे शख्स की जो ऐब टटोलने वाला, गीबत करने वाला हो|**
2. **जो माल को जमा करता जाये और गिनता जाये|**
3. **वो समझता है के उसका माल उसके पास सदा रहेगा|**
4. **हरगिज़ नहीं ये तो ज़रूर तोड़ फोड़ देने वाली आग में फ़ेंक दिए जायेगा|**
5. **और तुझे क्या मालूम के ऐसी आग क्या होगी?**
6. **वो अल्लाह ताला की सुलगाई हुई आग होगी|**
7. **जो दिलों पर चदती चली जाएगी|**
8. **वो इन पर हर तरफ से बंद की हुई होगी|**
9. **बड़े बड़े सुतूनो में|**

सूरह अल फील

1. **क्या तू ने देखा के तेरे रब ने हाथी वालो के साथ क्या किया?**

2. **क्या उनके मक्र को बेकार नहीं किया?**
3. **और उनपर परिंदों के झुण्ड के झुण्ड भेज दिए,**
4. **जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियां मार रहे थे|**
5. **पस उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर दिया|**

सूरह खुरैश

1. **खुरैश के मानूस करने के लिए|**
2. **यानी उन्हें जाड़े और गरमी के सफ़र से मानूस करने के लिए|**
3. **इसके शुक्रिये में पस उन्हें चाहिए के इसी घर के रब की इबादत करते रहें|**
4. **जिसने उन्हें भूक में खाना दिया और डर और खौफ में अमन व अमान दिया|**

सूरह अल माऊन

1. **क्या तू ने उसे भी देखा जो रोज़े जज़ा को झुटलाता है?**
2. **यही वो है जो यतीम को धक्के देता है|**
3. **और मिस्कीन को खिलाने की तरगीब नहीं देता|**
4. **उन नमाज़ियों के लिए अफ़सोस और वैल नामी जहन्नम की जगह है|**
5. **जो अपनी नमाज़ से ग़ाफिल है|**
6. **जो रियाकारी करते है|**
7. **और बरतने की चीज़ रोकते है|**

सूरह अल कौसर

1. **यकीनन हमने आपको हौज़ ए कौसर और बहुत कुछ दिया है|**
2. **पस आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुरबानी कीजिये|**
3. **यकीनन तेरा दुश्मन ही लावारिस और बेनाम व निशान है|**

सूरह अल काफिरून

1. **आप कह दीजिये के ऐ काफिरों !**
2. **ना मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम इबादत करते हो|**
3. **ना तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ|**
4. **और ना मैं इबादत करूंगा जिसकी तुम इबादत करते हो|**
5. **और ना तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत कर रहा हूँ|**
6. **तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है|**

सूरह अन नस्र

1. **जब अल्लाह की मदद और फतह आ जाये|**
2. **और आप लोगो को अल्लाह के दीन में जौख दर जौख आता देख लें|**
3. **तो अपने रब की तस्बीह करने लगो हम्द के साथ और उससे मग़फिरत की दुआ मांगो, बेशक वो बड़ा ही तौबा क़ुबूल करने वाला है|**

सूरह अल लहब

1. **अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वो खुद हलाक हो गया|**
2. **ना तो उसका माल उसके काम आया और ना उसकी कमाई|**
3. **वो अनकरीब भड़कने वाली आग में जायेगा|**
4. **और उसकी बीवी भी जाएगी, जो लकड़ियाँ ढोने वाली है|**
5. **उसकी गरदन में पोस्त खजूर की बुटी हुई रस्सी होगी|**

हदीस

1. इत्तखिल्लाहा हैसुमा कुंता
जहाँ कही हो अल्लाह से डरते रहो| (सुनन तिरमिज़ी : 1987)
2. अद-दुआओ हुवल इबादह

दुआ इबादत है| (सुनन अबी दावूद : 1479)

3. इज़ा सा-अलता फस-अलिल्लाह
जब माँगना हो तो अल्लाह से मांगो| (सहीह इब्ने माजह : 7957)

4. मन घश-शा फलैस मिन्ना
जो धोका दे हम में से नहीं| (सुनन तिरमिज़ी : 1315)

5. इह्फाज़िल्लाहा यहफज़का
अल्लाह के अहकाम की हिफाज़त करो अल्लाह तुम्हारी हिफाज़त करेगा| (सुनन तिरमिज़ी : 2516)

6. कुल्लुमारूफिन सदखा
हर नेकी सदखा है| (सहीह बुखारी : 6021, सहीह मुस्लिम : 1005)

7. सम्मिल्लाहा वकुल बियमीनिक
बिस्मिल्लाह कहो और दायें हाथ से खाओ| (बुखारी : 5376, मुस्लिम : 2022)

8. लिकुल्लि दा-इन दावा-उन
हर बीमारी का इलाज है| (मुस्लिम : 2204)

9. इत्तखी दा'वतल मज़लूम
मज़लूम की बददुआ से बचो| (बुखारी : 2448)

10. अलबिर्रू हुस्नुल खुलुखी
नेकी अच्छे अखलाख का नाम है| (मुस्लिम : 2553)

11. तहादो तहाब्बू

एक दूसरे को तोहफा दो के इससे मुहब्बत पैदा होती है| (सहीह जामे : 3004)

12. ला तसुब्बू असहाबी
मेरे सहाबा को गाली न दो| (सहीह मुस्लिम : 2540 & सहीह बुखारी : 3673)

13. ला तमन्नुल मौत
मौत की तमन्ना मत करो| (सुनन तिरमिज़ी : 2483)

14. अल-मजालिसु बिल अमानह
मजलिसें अमानत है| (सहीह जामे : 6678)

15. अफ्शुस-सलामा बैनकुम
अपने दरमियान सलाम को आम करो| (सहीह मुस्लिम : 54)

इस्लामी आदाब

1 खाने के आदाब
2 पीने के आदाब
3 सोने के आदाब
4 नींद से बेदार होने के आदाब
5 रोज़-मर्राह की दुआयें
6 मस्जिद के आदाब

खाने के आदाब

1 खाने से पहले और बाद में हाथ धोया करें| (सुनन नसाई : 256)
2 खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहें| (सहीह बुखारी : 5376 & सहीह मुस्लिम : 2022)

3 दायें हाथ से खायें| (सहीह मुस्लिम : 2020)

4 अपने सामने से खायें| (सहीह बुखारी : 5376 & सहीह मुस्लिम : 2022)

5 तीन उँगलियों से खायें| (सहीह मुस्लिम : 2032)

6 खाने के बाद अपनी उँगलियों को चाटें| (सहीह मुस्लिम : 2032)

7 अपनी प्लेट को भी अपने उँगलियों से चाटकर साफ़ करें| (सहीह मुस्लिम : 2033)

8 अगर शुरू में बिस्मिल्लाह कहना भूल जाये तो याद आने पर ये दुआ पढ़ें :
बिस्मिल्लाही अव्वलुहू व आखिरुहू
अल्लाह के नाम के साथ (खाना शुरू करता हूँ) इसके शुरू और इसके आखिर में| (सुनन अबी दावूद : 3767)

9 खाने के बाद ये दुआ पढ़ें :
अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत'अमनी हाज़ा व रज़खनीहि मिन घैरी हौलिम मिन्नी वला खुव्वह
हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने खाना मुझे खिलाया और मुझे ये खाना अता किया बगैर मेरी किसी ताखत और बगैर मेरी किसी खुव्वत के| (सहीह तिरमिज़ी : 3458)

10 अगर खाने की चीज़ नीचे गिर जाये तो उसे उठा कर साफ़ करके खा ले| (सहीह मुस्लिम : 2034)

11 खाने में ऐब ना निकालें| (सहीह बुखारी : 3370 & सहीह मुस्लिम : 2046)

12 हलख तक खाना ना खायें| (सुनन तिरमिज़ी : 2380)

13 टेक लगाकर खाना खायें| (सहीह बुखारी : 5399)

14 सोने और चांदी के बरतन में न खायें| (सहीह बुखारी : 5426 & सहीह मुस्लिम : 2067)

15 कोई चीज़ दो दो और तीन तीन अदद के साथ न खायें इल्ला ये के इजाज़त ले ली जाये| (सुनन तिरमिज़ी : 1814)

16 मेहमान, मेज़बान को ये दुआ दे :
अल्लाहुम्मा बारिक लहुम फी मा रज़खतहुम वघफिर लहुम वर हम-हुम
ऐ अल्लाह उनके लिए उन चीज़ों में बरकत अता फरमा जो तू ने उनको दी और उन्हें माफ़ फरमा और उनपर रहम फरमा| (सहीह मुस्लिम : 2042)

पीने के आदाब

1 पीने से पहले बिस्मिल्लाह कहें| (सहीह बुखारी : 5376 & सहीह मुस्लिम : 2022)
2 दायें हाथ से पियें| (सहीह मुस्लिम : 2020)
3 बायें हाथ से पीने से मना किया गया है, क्यों के शैतान बायें हाथ से खाता और पीता है| (सहीह मुस्लिम : 2020)
4 पानी बैठ कर पिया करें| (सहीह मुस्लिम : 2026)
5 हंगामी हालात में खड़े होकर पानी पीना जाएज़ है| (सहीह बुखारी : 5716)
6 पानी देख कर पिया करें| (मसनद अहमद : 7153, सहीह)

7 बड़े बरतन को मुंह लगा कर पीना मना है| (सहीह बुखारी : 5629)

8 पानी के बरतन में पीते वक़्त सांस छोडना मना है| (सहीह बुखारी : 5630)

9 दो या तीन सांस में पानी पीना चाहिए| (सहीह बुखारी : 5631)

10 अगर मख्खी किसी चीज़ में गिर जाये तो उसे इसमें पूरा डुबो कर फ़ेंक दे और वो चीज़ पीलें, क्यों के उसके एक पर में बीमारी और दूसरे पर में शिफा है| (सहीह बुखारी : 3320)

11 पानी पीने के बाद अल्हम्दुलिल्लाह कहे| (सहीह मुस्लिम : 2734)

12 पानी पिलाने वाले को सबसे आखिर में पीना चाहिए| (सुनन इब्न माजह : 3434)

13 पानी पिलाने वाले को ये दुआ देनी चाहिये :
अल्लाहुम्म अत-एम मन अत-अमनी वस्खी मन अस्खानी
ऐ अल्लाह उसे खिला जिसने मुझे खिलाया और उसे पिला जिसने मुझे पिलाया|
(सहीह मुसलिम : 2055)

14 दूध पीने के बाद कुल्ली करना सुन्नत है| (सहीह बुखारी : 211, सहीह मुस्लिम : 358)

15 दूध पीने के बाद ये दुआ पढ़े :
अल्लाहुम्मा बारिक लना फीही व ज़िदना मिन्हु
ऐ अल्लाह हमारे लिए इसमें बरकत फरमा और हमें इससे भी ज़्यादा दे| (सुनन तिरमिज़ी : 3458)

सोने के आदाब

1 सोने से पहले बिस्मिल्लाह कह कर दरवाज़े बंद करदें| (सहीह बुखारी : 6295)

2 चराग़ गुल करदें| (सहीह बुखारी : 6292)

3 बिस्मिल्लाह कह कर बरतन ढांक दें| (सहीह बुखारी : 6295)
4 अगर हाथ झूठा हो तो उसे धो लें| (सुनन अबी दावूद : 3852)
5 वुज़ू करके सोया करें| (सहीह बुखारी : 6311)
6 बिस्तर झटक कर सोया करें| (सहीह बुखारी : 6320)
7 सोते वक़्त ये दुआ पढ़ें :
अल्लाहुम्मा बिस्मिका अमूतु व अह्या
ऐ अल्लाह मैं तेरा नाम लेकर मरता हूँ और जीता हूँ| (सहीह बुखारी : 6325)
8 फिर आयतुल कुरसी पढ़ें| (सहीह बुखारी : 5010)
9 अपने दोनों हाथ उठायें, सूरह इखलास, फलख और नास तीन बार पढ़ कर अपने हाथ में फूंकें और तीन बार सारे जिस्म पर फेर लें| (सहीह बुखारी : 5017)
10. फिर ये पढ़ें :
सुबहानल्लाह 33 बार
अल्हम्दुलिल्लाह 33 बार
अल्लाहु अकबर 34 बार

नींद से बेदार होने के आदाब

1 जब नींद से बेदार हो तो बिस्तर पर बैठ कर अपने चेहरे से नींद पोछे| (सहीह बुखारी : 4570)
2 अपनी नाक तीन बार झाडे| (सहीह मुस्लिम : 238)
3 और जब बिस्तर से उठे तो ये दुआ पढ़ें :
अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बा'दमा अमातना व इलैहिन-नुशूर
हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें ज़िन्दा किया बाद इसके के उसने हमें मार दिया था और उसी की तरफ उठ कर जाना है| (सहीह बुखारी : 6325)

4 अपने हाथ धोने से पहले किसी चीज़ में न डालें क्यों के वो नहीं जानता के उसके हाथ रात कैसे गुज़ारे| (सहीह मुस्लिम : 278)
5 फिर अपने दाँत साफ़ करें| (सहीह बुखारी : 245, सहीह मुस्लिम : 255)

रोज़ मर्रा की दुआयें

शैतान से पनाह मांगने की दुआ :
----------?
पनाह मांगता हूँ मैं अल्लाह की शैतान मरदूद से| (सहीह बुखारी : 2448)

कोई भी काम शुरू करते वक़्त की दुआ :
शुरू करता हूँ अल्लाह ताला के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है| (REF ?)

इल्म में इज़ाफा की दुआ :
ऐ मेरे रब मेरे इल्म में इज़ाफा फरमा| (ताहा : 114)

शरह सदर की दुआ :
ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे| और मेरे काम को मुझ पर आसान करदे| और मेरी ज़बान की गिरह भी खोल दे| ताके लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सके| (ताहा : 25-28)

दुनिया और आखिरत की भलाई तलब करने की दुआ :
ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और हमें अज़ाबे जहन्नम से नजात दे| (अल बखरह : 201)

परेशानी के वक़्त की दुआ :
हमें अल्लाह काफी है और वो अच्छा कारसाज़ है| (आले इमरान : 173)

वालिदैन के हक़ में दुआ :

1 ऐ मेरे परवरदिगार ! इन पर वैसा ही रहम कर जैसा के उन्होंने मेरे बचपन में मेरी परवरिश की है| (बनी इसराईल : 24)

2 ऐ हमारे परवरदिगार ! मुझे बक्श दे और मेरे माँ बाप को भी बक्श और दीगर मोमिनो को भी बक्श जिस दिन हिसाब होने लगे| (इब्राहीम : 41)

मुसीबत के वक़्त की दुआ :
हम तो खुद अल्लाह ताला की मिल्कियत है और हम उसी की तरफ लौटने वाले है| (अल बखरह : 156)

मस्जिद के आदाब

मस्जिद अल्लाह की पसन्दीदः जगह है| (सहीह मुसलिम : 671)
मस्जिद की तरफ तेज़ चल कर आना ममनू है| (सहीह बुखारी : 636)
कच्ची लैसन और प्याज़ खाकर मस्जिद में आना ममनू है| (सहीह बुखारी : 7359, सहीह मुस्लिम : 564)
मस्जिद में दाखिल होते वक़्त दायाँ पैर और निकलते वक़्त बायाँ पैर रखना चाहिए| (सिलसिला सहीहा : 2478)
मस्जिद में दाखले की दुआ :

1 मैं शैतान मरदूद से अज़मत वाले अल्लाह की, उसके करीम चेहरे और उसकी खदीम सल्तनत की पनाह मांगता हूँ| (सुनन अबी दावूद : 466)

2 अल्लाह के नाम के साथ (दाखिल होता हूँ) और दुरूद व सलाम हो रसूलुल्लाह ﷺ पर| (इब्नुल सुन्ती : 88, सुनन अबी दावूद : 465)

3 ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे| (सुनन अबी दावूद : 465)

मस्जिद से निकलने की दुआ :

1 अल्लाह के नाम के साथ (बाहर निकलता हूँ) और दुरूद व सलाम हो रसूलुल्लाह ﷺ पर| (इब्नुल सुन्ती : 88, सुनन अबी दावूद : 465)

2 ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपने फज़ल के दरवाज़े खोल दे| (सुनन अबी दावूद : 465)

3 ऐ अल्लाह ! मरदूद शैतान से मेरी हिफाज़त फरमा| (सुनन इब्न माजह : 773)

वुज़ू का तरीक़ा

1. **वुज़ू से पहले दिल में वुज़ू की निय्यत कर लेनी चाहिए| और फिर कहना चाहिए : बिस्मिल्लाह**
2. **दोनों हाथ कलाय्यों तक अच्छी तरह धोना चाहिए, उँगलियों के दरमियान खिलाल भी करें| (तीन बार)**
3. **कुल्ली करें| (तीन बार)**

4. **नाक में पानी चढ़ायें| (तीन बार)**
5. **चहरा धोयें| (तीन बार)**
6. **कोहनियों समेत दोनों हाथ धोयें, सीधे हाथ से शुरू करें| (तीन बार)**
7. **सर का मसह करें| (एक बार)**
8. **कान का मसह करें| (एक बार)**
9. **टखनों तक पैर धोयें, उँगलियों के दरमियान खिलाल भी करें, सीधे पैर से शुरू करें| (तीन बार)**

वुज़ू के बाद ये दुआ पढ़ें :
अश-हदु ला इलाहा इल्लल्लाह, वह्दहु ला शरीक लहु, व अश-हदु अन्न मुहम्मदन-अब्दुहु व रसूलुहु, अल्लाहुम्म जल्नी मिनत तव्वाबीन वज'अल्नी मिनल मुत-तह्हिरीन (सुनन तिरमिज़ी : 55)

वुज़ू की दुआयें

वुज़ू से पहले की दुआ :
अल्लाह के नाम के साथ शुरू करता हूँ|
(सुनन अबी दावूद : 101)

वुज़ू के बाद की दुआयें :
मैं शहादत देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और उसके रसूल है|
(सहीह मुस्लिम : 234)

ऐ अल्लाह ! मुझे बहुत तौबा करने वालो में से बनादे और मुझे पाक साफ़ रहने वालो में से करदे| (सुनन तिरमिज़ी : 55)

अज़ान

अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है, मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है, नमाज़ के लिए आओ, नमाज़ के लिए आओ, कामयाबी के तरफ आओ, कामयाबी के तरफ आओ, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं| (सुनन अबी दावूद : 499, सुनन इब्न माजह : 706)

नोट : अज़ान फजर में (हय्यालल फलह) के बाद (अस्सलातु खैरुम मिनन्नौम - नमाज़ नींद से बेहतर है) कहना चाहिए| (सुनन अबी दावूद : 500)

अज़ान के बाद की दुआयें

ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और आले मुहम्मद पर जैसे तूने रहमत नाज़िल फरमाई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर यकीनन तू काबिले तारीफ़, बड़ी शान वाला है| ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और आले मुहम्मद पर जैसे तूने बरकत नाज़िल फरमाई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर यकीनन तू काबिले तारीफ़ बड़ी शान वाला है| (सहीह मुस्लिम : 384)

ऐ अल्लाह ! इस दावत ए कामिल और खायम होने वाली नमाज़ के रब, तू मुहम्मद ﷺ को खास तखर्रुब और ख़ास फ़ज़ीलत अता कर और उन्हें उस मखाम ए महमूद पर

फैज़ फरमा जिसका तूने उनसे वादा किया है| (सहीह बुखारी : 614)

मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं| मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है| मैं अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर राज़ी व खुश हूँ| (सहीह मुस्लिम : 386)

इखामत

अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है, नमाज़ के लिए आओ, कामयाबी के तरफ आओ, यकीनन नमाज़ क़ायम होगयी, यकीनन नमाज़ क़ायम होगयी, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है| (सुनन तिरमिज़ी : 55)

नमाज़ का तरीका

उसी तरह नमाज़ पढो जिस तरह तुम ने मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है| (सहीह बुखारी : 631)

नमाज़ का तरीका चार्ट में मुलाहज़ा फरमाये, जो इस किताब से मुंसलिक है या इस website पर जायें :

शुमार	नमाज़	फर्ज़ रकात की तादाद
1	फज्र	2
2	जुह्र	4
3	अस्र	4
4	मग़रिब	3

5 इशा 4

नमाज़ की दुआयें

तकबीर ए तहरीमा के बाद की दुआ :
ऐ अल्लाह मैं तेरी हम्द के साथ तेरी पाकीज़गी बयान करता हूँ और तेरा नाम बहुत बा-बरकत है और तेरी शान बुलंद है और तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं| (सुनन अबबी दावूद : 775)

रुकू की दुआ :
पाक है मेरा रब अज़मत वाला| (सुनन अबी दावूद : 871)

रुकू से उठने की दुआ :
अल्लाह ने सुनली जिसने उसकी तारीफ़ की| (सहीह बुखारी : 795)

ऐ हमारे रब ! तेरे ही लिए हर किस्म की तारीफ़ है| तारीफ़ बहुत ज़्यादा पाकीज़ा जिसमे बरकत की गयी है| (सहीह बुखारी : 799)

सजदे की दुआ :
पाक है मेरा रब जो सब से बुलंद है| (सुनन अबी दावूद : 871)

दो सजदों के दरमियान की दुआ :
ऐ मेरे रब ! मुझे माफ़ करदे| ऐ मेरे रब ! मुझे माफ़ करदे| (सुनन अबी दावूद : 874)

ताशह्हुद

मेरी तमाम खौली, फेली और माली इबादतें अल्लाह ही के लिए है, ऐ नबी आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकत हो, हम पर और अल्लाह के दीगर नेक बन्दों पर भी सलाम हो, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और उसके रसूल है| (सहीह बुखारी : 831)

दुरूद

ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और आले मुहम्मद पर, जैसे तूने रहमत नाज़िल फरमाई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर, यकीनन तू काबिले तारीफ़, बड़ी शान वाला है| ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और आले मुहम्मद पर, जैसे तूने बरकत नाज़िल फरमाई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर, यकीनन तू काबिले तारीफ़, बड़ी शान वाला है| (सहीह बुखारी : 3370)

सलाम फेरने से पहले की दुआयें

ऐ अल्लाह बेशक मैं अज़ाब ए खबर से तेरी पनाह में आता हूँ और मसीह दज्जाल के फितने से तेरी पनाह में आता हूँ और ज़िन्दगी और मौत के फितने से तेरी पनाह में आता हूँ, ऐ अल्लाह यकीनन मैं गुनाह और खर्ज से तेरी पनाह में आता हूँ| (सहीह मुस्लिम : 589)

ऐ अल्लाह बिला शुबा मैंने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया और तेरे सिवा कोई गुनाह माफ़ नहीं कर सकता, पस तू अपनी ख़ास बख्शिश से मुझे माफ़ फरमा दे

और मुझ पर रहम फरमा, यकीनन तू बहुत बखश्ने वाला, इन्तेहाई मेहरबान है| (सहीह बुखारी : 834)

कुनूत ए वित्र की दुआ :

ऐ अल्लाह मुझे हिदायत वालो में हिदायत नसीब फरमा, और मुझे आफियत दे, और मेरा कारसाज़ बन और तू ने जो मुझे दिया है उसमे बरकत अता फरमा, और जो तूने फैसला किया है उसके शर से मुझे महफूज़ रख, क्यों के तू ही फैसला करने वाला है, तेरे खिलाफ कोई फैसला नहीं कर सकता और जिसका तू वली बन जाये उसे कोई ज़लील नहीं कर सकता, और जिसके साथ तू दुश्मनी करे उसे कोई इज्ज़त नहीं दे सकता, ऐ हमारे रब तू बाबरकत है और तेरे अलावा कही जाये पनाह नहीं| (सुनन अबी दावूद : 1425, सुनन तिरमिज़ी : 464, सुनन नसाई : 1746)

फर्ज़ नमाज़ के बाद के अज्कार

अल्लाह सब से बड़ा है| (एक बार बा आवाज़ बुलंद) (सहीह बुखारी : 842)

मैं अल्लाह से बख्शिश तलब करता हूँ| (तीन बार) (सहीह मुस्लिम : 591)

या अल्लाह ! तू सलामती है, सलामती तुझी से हासिल हो सकती है| ऐ बुज़ुरगी और बख्शिश के मालिक, तेरी ज़ात बड़ी बा बरकत है| (एक बार) (सहीह मुस्लिम : 591)

अल्लाह ताला के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी की है, हम्द उसी को सज़ावार है, वो हर चीज़ पर क़ादिर है| ऐ

अल्लाह ! जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिसे तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और नहीं फ़ायदा दे सकती किसी साहिब ए हैसियत को तेरे हाँ उसकी हैसियत| (एक बार) (सहीह बुखारी : 6330, सहीह मुस्लिम : 593)

ऐ अल्लाह ! मुझे अपना ज़िक्र, शुक्र और अपनी बेहतरीन इबादत करने की तौफीख अता फरमा| (एक बार) (सुनन अबी दावूद : 1522, सहीह)

अल्लाह ताला के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी की है, हम्द उसी को सज़ावार है, वो हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह की तौफीख के बगैर न गुनाह से बचने की ताखत है न नेकी करने की कुव्वत, अल्लाह ताला के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, उसके सिवा हम किसी की बंदगी नहीं करते, सब नेमतें उसी की तरफ से है, बुज़ुरगी उसी के लिए है, बेहतरीन तारीफ़ का मालिक वही है उसके सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, हम अपना दीन उसी के लिए खालिस करते है, काफिरों को ख्वाह कितना ही नागवार क्यों न गुज़रे| (एक बार) (सहीह मुस्लिम : 594)

अल्लाह ही माबूद ए बरहक़ है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो ज़िन्दा और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊंग आती है न नींद| उसी की मिल्कियत में आसमान व ज़मीन की चीज़ें है, कौन है जो उसकी इजाज़त के बगैर उसके सामने शिफाअत कर सके, वो जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है| वो उसकी मरज़ी के बगैर किसी चीज़ के इल्म का इहाता नहीं कर सकते| उसकी कुरसी की वुसत ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है| अल्लाह उनकी

हिफाज़त से न थकता और न उक्ताता है| वो बुलंद और बहुत बड़ा है| (एक बार) (सहीह जामे : 6464)

आप कह दीजिये के वो अल्लाह ताला एक है| अल्लाह ताला बेनियाज़ है| न उससे कोई पैदा हुआ, न वो किसी से पैदा हुआ| और न कोई उसका हंसर है| (एक बार) (सुनन अबी दावूद : 1523, सहीह)

आप कह दीजिये के मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ| हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है| और अंधेरी रात की तारीकी के शर से जब उसका अंधेरा फ़ैल जाये और गिरह लगा कर उनमे फूंकने वालियों के शर से भी| और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वो हसद करे| (एक बार) (सुनन अबी दावूद : 1523, सहीह)

आप कह दीजिये के मैं लोगो के परवरदिगार की पनाह में आता हूँ, लोगो के मालिक की और लोगो के माबूद की पनाह में, वसवसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले के शर से, जो लोगो के सीनों में वसवसा डालता है, ख्वाह वो जिन्नों में से हो या इंसानों में से| (एक बार) (सुनन अबी दावूद : 1523, सहीह)

ऐ परवरदिगार मुझे अपने अज़ाब से बचा लेना जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा| (एक बार) (सहीह मुस्लिम : 709)

ऐ अल्लाह बिला शुबा मैं बुख्ल से तेरी पनाह में आता हूँ और मैं बुज़दिली से तेरी पनाह में आता हूँ और मैं उस बात से तेरी पनाह में आता हूँ के उम्र के रज़ील तरीन हिस्से (यानी बुढ़ापे) की तरफ लौटाया जाऊँ और मैं दुनिया

के फितने से तेरी पनाह में आता हूँ और मैं अज़ाब ए खबर से तेरी पनाह में आता हूँ| (एक बार) (सहीह बुखारी : 2822)

ऐ अल्लाह मेरे वो सारे गुनाह बक्श दे जिसे मैंने पहले किया और जिसे बाद में किया, जिसे मैंने पोशीदा किया और जिसे मैंने अलानिया किया| और जो मैंने ज्यादतियां की है और जिन गुनाहों को तू मुझ से ज़्यादा अच्छी तरह जानता है, तू ही अव्वल व आखिर है, तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं| (एक बार) (सुनन अबू दावूद : 1509, सहीह)

ऐ अल्लाह मैं कुर्फ़, मोहताजगी और खबर के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ| (एक बार) (सुनन नसाई : 1347, सहीह)

ऐ अल्लाह ! मेरे लिए मेरे दीन को दुरूस्त फरमा दे जिसे तूने मेरे लिए बचाव का ज़रिया बनाया है, और मेरे लिए मेरी दुनिया दुरूस्त फरमा दे जिसमे मेरी रोज़ी है, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामंदी की पनाह चाहता हूँ, और तेरे अज़ाब से तेरे अफ्फु व दरगुज़र की पनाह चाहता हूँ, और मैं तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ, नहीं है कोई रोकने वाला उसको जो तू देदे और नहीं है कोई देने वाला उसे जिसे तू रोक ले, और न मालदार को उसकी मालदारी बचा पायेगी| (एक बार) (सुनन नसाई : 1346, इब्ने खुज़ैमा : 745, इब्ने हिब्बान : 2036, हसन-----)

ऐ अल्लाह मुझे बरोज़ ए क़ियामत रुसवा न करना| (एक बार) (मुसनद अहमद : 18056, सहीह)

नहीं है कोई माबूद ए बरहक़ सिवाए अल्लाह के, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए सारी तारीफें है, वही ज़िन्दगी और मौत देता है, उसी के हाथ में खैर है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है| (एक बार) (तबरानी फिल कबीर : 8075, हसन)

ऐ अल्लाह मुझे बक्श दे और मुझ पर रहम फरमा, मुझे आफियत दे और रोज़ी अता कर| (एक बार) (सहीह इब्न खुज़ैमा : 744, सहीह)

ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफा बक्श इल्म, पाकीज़ह रिज्क और क़ुबूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ| (एक बार) (सुनन इब्न माजह : 925, सहीह)

अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसके लिए बादशाहत है और उसी के लिए तमाम तारीफात, वो ज़िन्दा करता है और मारता है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है| (दस बार) (सुनन तिरमिज़ी : 3534, हसन)

पाक है बादशाह, बहुत पाकीज़ह| (तीन बार, तीसरी बार बा आवाज़ बुलंद) (सुनन नसाई : 1699, सहीह)

अल्लाह सब से बड़ा है| (33 बार)
तमाम तारीफें अल्लाह के लिए है| (33 बार)
अल्लाह पाक है| (33 बार)
फिर ये कह कर सौ की गिनती मुकम्मिल करें :
अल्लाह ताला के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी की है,

हम्द उसी को सज़ावार है, वो हर चीज़ पर क़ादिर है| (एक बार) (सहीह मुस्लिम : 597)

नसीहतें

और जब के लुखमान ने वाज़ कहते हुए अपने लड़के से फ़रमाया के मेरे प्यारे बच्चे ! अल्लाह के साथ शरीक न करना बेशक शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है| (लुखमान : 13)

हमने इन्सान को उसके माँ बाप के मुताल्लिख नसीहत की है, उसकी माँ ने दुःख पर दुःख उठा कर उसे हमल में रखा और उसकी दूध छुड़ाई दो बरस में, है के तू मेरी और अपने माँ बाप की शुकर गुज़ारी कर, तुम सब को मेरी ही तरफ लौट कर आना है| और अगर वो दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें के तू मेरे साथ शरीक करे जिसका तुझे इल्म न हो तो तू उनका कहना न मानना, हाँ दुनिया में उनके साथ अच्छी तरह बसर करना और उसकी राह पर चलना जो मेरी तरफ झुका हुआ हो, तुम्हारा सब का लौटना मेरी ही तरफ है, तुम जो कुछ करते हो उसे फिर मैं तुम्हे खबरदार करूंगा| (लुखमान 14-15)

खिसस

खुश नसीब बच्चा

अम बिन सलमा रज़िअल्लाहुअन्हु अपना खिस्सा इन अलफ़ाज़ में बयान करते है :
हम एक चश्मे पर जहाँ लोगो की गुज़रगाह थी रहते थे, हमारे पास से खाफ्ले गुज़रते थे, तो हम उन खाफिलों से पूछते थे के लोगो का क्या हाल है? और नुबुव्वत के

दावेदार आदमी की क्या हालत है? तो वो जवाब देते के वो दावा करता है के वो अल्लाह का रसूल है, जिसकी तरफ वही होती है|

मैं वो वही याद करलिया करता गोया वो मेरे सीने में महफूज़ है| और अहले अरब अपने इस्लाम लाने में फतह ए मक्का का इंतज़ार करते थे और ये कहते के मुहम्मद ﷺ और उनकी कौम कुरैश को मिटने दो अगर मुहम्मद ﷺ ग़ालिब आ गए तो आप सच्चे नबी है|

चुनाचे जब फतह मक्का का वाखिया हुआ तो हर कौम ने इस्लाम लाने में सबक्कत की और मेरे वालिद भी अपनी कौम के मुसलमान होने में जल्दी करने लगे और मुसलमानों से जब वापस आये तो कहा अल्लाह की कसम, मैं तुम्हारे पास नबी ए बरहक़ के पास से आया हूँ, उन्होंने फ़रमाया है के फुलां फुलां वक़्त ऐसे ऐसे नमाज़ पढो, जब नमाज़ का वक़्त आ जाये तो एक आदमी अज़ान कहे और जिसे कुरआन ज़्यादा याद हो वो इमाम बने|

चूंके मैं खाफिले वालो से कुरआन सीखकर याद कर लेता था इस लिए इनमे से किसी को भी मुझ से ज़्यादा कुरआन याद न था, मैं 6 या 7 साल का था के उन्होंने मुझे इमामत के लिए आगे बढा दिया|

और मेरे जिस्म पर एक चादर थी जब मैं सजदा करता तो वो ऊपर चढ़ जाती और जिस्म ज़ाहिर हो जाता तो खबीले की एक औरत ने कहा तुम अपने इमाम की सतर हम से क्यों नहीं छुपाते? तो उन्होंने कपड़ा खरीद कर मेरे लिए एक खमीस बना दी| मैं इतना किसी चीज़ से खुश नहीं हुआ जितना इस खमीस से|

कामयाब बाप और नाकाम औलाद का वाखिया

एक शख्स बड़ा नेक और सखी था| उसका बाग़ था| वो अल्लाह के हक को हमेशा अदा करता था| उस बाग़ की पैदावार में अपने बाल बच्चो और बाग़ के खर्च को निकाल कर बाकी अल्लाह ताला के रास्ते में खर्च कर डालता था| इसलिए अल्लाह ताला ने उसके माल में बड़ी बरकत दे राखी थी| उसके इन्तेखाल के बाद जब उस बाग़ की वारिस उसकी औलाद हुई, तो उन लोगो ने आपस में मशवरा करके तै किया के हकीकत में हमारा बाप बड़ा ही नादान था जो इतनी बड़ी रखम गरीबो और मिस्कीनो में बिला वजह दे दिया करता था| लिहाज़ा हम इन गरीबो के हक को रोकें और उनको कुछ न दे तो हमारे पास बहुत माल जमा हो जायेगा और हम सब मालदार हो जायेंगे|
जब ये मशवरा कर चुके और बाग़ के फल पाक गए और खेती तैयार हो गयी तो रात ही को उन लोगो ने कसमें खायें के सुबह होने से पहले पहले, रात के वक़्त चलो और रात को फल तोड़ लाओ, ताके किसी को खबर न होने पाये, चलते वक़्त एक दूसरे को जगाओ और चुपके चुपके दबे पाव चलो ताके गरीबो को खबर न होने पाये के आज फल तोड़ने का दिन है वरना अपने बाप से दस्तूर के मुताबिख मजबूरन कुछ न कुछ देना ही पड़ेगा| ये सब मंसूबे बना कर काना फूसी करते हुए बाग़ की तरफ चले| इधर उनके पहुँचने से पहले ही उस बाग़ पर अल्लाह का अज़ाब आया और आग ने जलाकर खाकसार कर दिया| अब वहां कोई दरख़्त रहा और न लहलहाती सर सब्ज़ खेतियाँ रहें और न फल फूल रहे सिवाए राख के जलते झुलसते ढेरों के कुछ न था| ऐसा मालूम होता था के कभी यहाँ बाग़ था ही नहीं, जब ये लोग वहां पहुंचे और ये माजरा देखा तो हक्के बिक्के होकर रह गए| और हैरान व परेशान हुए, फिर आपस में कहने लगे के हम रास्ता भूल गए, फिर

निशानात वगैरा देख कर समझ गए और कहने लगे के हमारी बदबख्ति और बखीली के सबब ये बरबादकुन और बुरे नतायेज निकले है| अपने गलती को एतेराफ करते है और एक दूसरे को मलामत करते है|

दीन की अहम् और बुनयादी तालीमात

अरकाने इस्लाम

रसूल ﷺ ने फ़रमाया : "इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर है|"

1 शहादतें : "गवाही देना के अल्लाह ताला के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बन्दे और रसूल है|" (यानी अल्लाह के दीन में उनकी इतात करना ज़रूरी है)

2 नमाज़ क़ायम करना : यानी उसे उसकी तमाम शुरूत, अरकान और वाजिबात के साथ खुशू व खुज़ू से अदा करना|

3 ज़कात देना : ये उस वक़्त फर्ज़ होती है जब कोई मुसलमान 85 ग्राम सोने या उसके मसावी नक्दी का मालिक हो जाये| इसमें से साल के बाद ढाई फीसद अदा करना ज़रूरी है और नकदी समेत हर चीज़ में उसके मिकदार ----- है|

4 रमज़ान के रोज़े रखना : रोज़े की निय्यत से खाने पीने और हर ऐसी चीज़ से जो रोज़ा तोड़ने वाली हो फज्र से लेकर गुरूब ए आफताब तक रुके रहना|

5 बैतुल्लाह का हज करना : हर उस शख्स के लिए फर्ज़ व लाज़िम है जो सहत और माली एतेबार से वहां तक पहुँचने की ताकत रखता हो| (सहीह बुखारी : 8)

ईमान के छे (6) अरकान है

1. **अल्लाह ताला पर ईमान लाना : यानी अल्लाह ताला के वजूद, उसकी सिफात, इबादत, दुआ और हुकुम में उसकी वहदानियत पर ईमान लाना|**
2. **फरिश्तो पर ईमान लाना : जो नूरी मख्लूख है और अल्लाह ताला के अहकाम नाफ़िज़ करने के लिए पैदा किये गए है|**
3. **अल्लाह की किताबो पर ईमान लाना : यानी तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन पर जो सब से अफज़ल है|**
4. **अल्लाह के रसूलो पर ईमान लाना : जिन में सब से पहले नूह अलैहिस्सलाम और आखिर में मुहम्मद ﷺ है|**
5. **आखिरत के दिन पर ईमान लाना : यानी क़ियामत के दिन पर, जो लोगो के आमाल के मुहासबे और जज़ा का दिन है|**
6. **अच्छी या बुरी तक़दीर पर ईमान रखना : यानी जाएज़ असबाब अपनाते हुए हर इन्सान को अच्छी या बुरी तक़दीर पर राज़ी रहना चाहिए क्यों के ये अल्लाह ताला की तरफ से मुक़र्रर की गयी है|**

तौहीद

रिसालत

आखिरत

मुहम्मद ﷺ की मक्की ज़िन्दगी के ये तीन बुनयादी दावती काम रहे|

खबर के चार सवाल

मय्यित के पास दो फ़रिश्ते आते है, उसे बिठाते है और उससे पूछते है : तुम्हारा रब कौन है? तो वो कहता है, मेरा रब अल्लाह है| फिर वो दोनों उससे पूछते है : तुम्हारा दीन क्या है? वो कहता है, मेरा दीन इस्लाम है| फिर पूछते है : ये कौन है जो तुम में भेजा गया था? वो कहता है, वो अल्लाह के रसूल है| फिर वो दोनों उससे कहते है : तुम्हे ये कहाँ से मालूम हुआ? वो कहता है, मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी और उस पर ईमान लाया और उसको सच समझा|
(सुनन अबू दावूद : 4753, सहीह)

पैदाईश का मकसद

मैंने जिन्नात और इंसानों को महेज़ इसी लिए पैदा किया है के वो सिर्फ मेरी इबादत करें|
(ज़ारियात : 56)

Q.1) तौहीद ए रुबूबियत किसे कहते है?

A) अल्लाह ताला को उसकी ज़ात और अफाल में एक जानना और एक मानना तौहीद ए रुबूबियत कह लाता है| जैसे : पैदा करना, मारना वगैरा|

Q.2) तौहीद ए उलूहियत किसे कहते है?

A) हर किस्म की इबादत को चाहे ज़ाहेरी हो या बातिनी सिर्फ अल्लाह के लिए ख़ास करना और किसी दूसरे को उसमे शरीक न करना| जैसे : दुआ, क़ुरबानी वगैरा|

Q.3) तौहीद ए अस्मा व सिफात किसे कहते है?

A) अल्लाह ताला ने कुरआन ए मजीद में अपने जो नाम और सिफात बयान किये है और इसी तरह अल्लाह के रसूल ﷺ ने अल्लाह के जो नाम और सिफात बयान किये है, उन्हें अल्लाह के शयान ए शान मानना बगैर किसी तहरीफ़, तशबीह, तमसील, तकईफ, तावील, तातील किये|

Q.4) इबादत का मतलब क्या है?

A) अल्लाह के हर पसंदीदा कौल व फेल को चाहे ज़ाहिरी हो या बातिनी, इखलास ए निय्यत के साथ शरियत के मुताबिख बजा लाने को इबादत कहते है|

Q.5) इबादत की कितनी किस्में है?

A) इबादत की चार किस्में है :

1 कलबी इबादत, जैसे : तवक्कुल, मुहब्बत, खौफ, उम्मीद|

2 कौली इबादत, जैसे : माँगना, मदद तलब करना, पनाह तलब करना, तौबा व अस्तग्फार करना, कसम खाना वगैरा|

3 फेली इबादत, जैसे : कियाम, रुकू, नज़र व नियाज़, क़ुरबानी वगैरा|

4 माली इबादत, जैसे : ज़कात, नज़र व नियाज़, क़ुरबानी वगैरा|

Q.6) रसूल ﷺ कब और कहाँ पैदा हुए?

A) रसूल ﷺ 9 रबी-उल-अव्वल एक आमूल फील यानी 20 APRIL 571 A.D पीर के दिन मक्का में पैदा हुए|

Q.7) रसूल ﷺ का बचपन कैसा था?

A) रसूल ﷺ यतीम पैदा हुए| आप की वालिदा के बाद आप ﷺ को सुवैबा और फिर हलीमा सादिया ने दूध पिलाया| 6 साल की उमर को पहुंचे तो वालिदा इन्तेखाल कर गयी, जिसके बाद दादा की किफ़ालत में रहे| 8 साल की उमर को पहुंचे तो दादा इन्तेखाल कर गए, जिसके बाद चाचा अबू तालिब ने आप की किफ़ालत शुरू करदी| आप ﷺ बचपन में मक्का वालो की बकरिया चराई, फिर तिजारत का पेशा इख़्तियार किया|

इस्लामी महीनो के नाम

1 मुहर्रम

2 सफ़र

3 रबी-उल-अव्वल

4 रबी-उल-आखिर

5 जुमाद-उल-ऊला

6 जुमाद-उल-आखिरह

7 रज्जब

8 शाबान

9 रमज़ान

10 शव्वाल

11 ज़ुल-खादह

12 ज़ुल-हज्जह

अस्मा उल अम्बिया

1. **आदम अलैहिस्सलाम**
2. **इदरीस अलैहिस्सलाम**
3. **नूह अलैहिस्सलाम**
4. **हूद अलैहिस्सलाम**
5. **सालेह अलैहिस्सलाम**
6. **लूत अलैहिस्सलाम**
7. **इब्राहीम अलैहिस्सलाम**
8. **इस्माईल अलैहिस्सलाम**
9. **इसहाख अलैहिस्सलाम**
10. **याखूब अलैहिस्सलाम**
11. **यूसुफ अलैहिस्सलाम**
12. **शुऐब अलैहिस्सलाम**
13. **अय्यूब अलैहिस्सलाम**
14. **ज़ुल-किफ्ल अलैहिस्सलाम**

15. **यूनुस अलैहिस्सलाम**
16. **मूसा अलैहिस्सलाम**
17. **हारुन अलैहिस्सलाम**
18. **इल्यास अलैहिस्सलाम**
19. **अल-यसा अलैहिस्सलाम**
20. **दावूद अलैहिस्सलाम**
21. **सुलैमान अलैहिस्सलाम**
22. **ज़करिय्या अलैहिस्सलाम**
23. **यहया अलैहिस्सलाम**
24. **ईसा अलैहिस्सलाम**
25. **मुहम्मद** ﷺ

अशरह मुबश-शरह

1. **अबू बक्र सिद्दीख रज़िअल्लाहुअन्हु**
2. **उमर बिन खत्ताब रज़िअल्लाहुअन्हु**
3. **उस्मान बिन अफ्फान रज़िअल्लाहुअन्हु**
4. **अली बिन अबी तालिब रज़िअल्लाहुअन्हु**
5. **तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़िअल्लाहुअन्हु**
6. **ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़िअल्लाहुअन्हु**
7. **साद बिन अबी वख्खास रज़िअल्लाहुअन्हु**
8. **अब्दुर रहमन बिन औफ रज़िअल्लाहुअन्हु**
9. **सईद बिन ज़ैद रज़िअल्लाहुअन्हु**
10. **अबू उबैदह बिन जर्राह रज़िअल्लाहुअन्हु**

तौहीद के बाज़ खवायेद

ज़बर ज़ेर पेश को हरकात कहते है|
ज़बर ज़ेर पेश को जल्दी पढ़ें थोडा भी न खींचे|

ज़बर सीधा मुंह खोल कर अदा किया जाता है, ज़बर की आवाज़ ऊपर को जाती है|
ज़ेर होंटो को नीचे की तरफ झुका कर अदा किया जाता है, ज़ेर की आवाज़ नीचे को जाती है|
पेश होंटो को गोल नतामाम बंद करके अदा किया जाता है, पेश की आवाज़ आगे को जाती है|
दो ज़बर, दो ज़ेर, दो पेश को तनवीन कहते है|
हुरूफ़ ए माद्दह तीन है : अलिफ़, वाव, या| अगर अलिफ़ से पहले ज़बर हो, वाव साकीन से पहले पेश हो और या साकीन से पहले ज़ेर हो तो ये हुरूफ़ एक अलिफ़ के बराबर खींच कर पढ़े जाते है| (ताबा)
हुरूफ़ ए लीन दो है : वाव, या| जब ये साकिन हो और उनसे पहले हर्फ़ पर ज़बर हो तो इनको नरमी से अदा करना चाहिए| (बौ, बै)
एक अलिफ़ से ज़ायेद खींच कर पढ़ने को मद कहते है|

सवालात

सवालात बराये सूरतें

सूरह अस्र

सूरह अस्र का तरजुमा क्या है?
सूरह अस्र में कितनी आयतें है?
सूरह अस्र में क्या बातें बताई गयी है?
कौनसा इन्सान फ़ायदे में है?
नुक्सान में कौन लोग है?

सूरह हुमुज़ह

ये सूरत मक्की है या मदनी है?
पहली आयत का मानी क्या है?
बखील कौन है?

सूरह फील

सूरह फील में किस का क़िस्सा बयान किया गया है?
अब्रहा कौन है?
अब्रहा क्यों आया था?
हाथियों के साथ क्या हुआ?
हाथियों को किसने मारा?
सूरह फील का तरजुमा सुनायें?

सूरह क़ुरैश

क़ुरैश कौन है?
क़ुरैश कहाँ जाया करते थे?
क़ुरैश पर अल्लाह के क्या अहसानात थे?
क़ुरैश के लोग ताजिर थे या किसान?
क़ुरैश तिजारत के लिए किधर जाया करते थे?

सूरह माऊन

इस सूरत में कितनी आयतें है?
क्या आप ने इस सूरत को मुकम्मिल याद किया है?
क्या आप जानते है के इस सूरत में किसका तज़किरह किया गया है?
पूरी सूरत का तरजुमा सुनायें?
छोटी छोटी चीज़ें कोई मांगे तो हमें क्या करना चाहिए?
अगर कोई दूसरो की मदद न करे तो?

सूरह कौसर

सूरह कौसर का तरजुमा सुनायें?
सूरह कौसर में कितनी आयतें है?
कौसर का क्या मतलब है?

कौसर का पानी कैसा होगा?
नबी को किसने बुरा भला कहा?

सूरह काफिरून

इबादत किसकी होनी चाहिए?
क्या हम अल्लाह के अलावा किसी की इबादत कर सकते है?
सूरह काफिरून का तरजुमा सुनायें?
हमारा दीन क्या है?
आखरी आयत का मानी क्या है?

सूरह नस्र

सूरह नस्र मक्की है या मदनी है?
क्या आप को सूरह नस्र याद है?
क्या आप को सूरह नस्र का तरजुमा याद है?
क्या आप बता सकते है यहाँ मदद का मतलब क्या है?
इस्तेग़फार किससे करना चाहिए?

सूरह लहब

अबू लहब कौन है?
अबू लहब क्या करता था?
अबू लहब की बीवी क्या करती थी?
सूरह लहब का तरजुमा सुनायें?
अबू लहब का पहला जुर्म क्या था?

सवालात बराये अहादीस

हदीस नं 1

इस हदीस को याद करें?

इस हदीस को याद करें?

इस हदीस के तरजुमे को याद करें?

अल्लाह से कब और कहाँ डरना चाहिए?

हदीस का हवाला क्या है?

हदीस नं 2

दुआ किससे करनी है?

कुछ दुआयें याद करें?

रसूल ﷺ की कोई दुआ सुनायें?

यूनुस अलैहिस्सलाम की दुआ याद करें?

हदीस का तरजुमा सुनायें?

हदीस नं 3

सवाल किस से करेंगे?

रसूल ﷺ ने ये बात किस से कही?

क्या अल्लाह के अलावा कोई सुन सकता है?

हमेशा और हर एक की कौन सुनता है?

अगर हमें कोई चीज़ चाहिए तो किस से मांगे?

हदीस नं 4

हदीस को ज़बानी याद करें?

हदीस का तरजुमा सुनायें?

धोका किस को कहते है?

धोका कौन देते है?

धोका किन किन चीजों में दिया जाता है? कुछ चीजों के नाम बतायें?

हदीस नं 5

अल्लाह को याद कैसे करें?

अल्लाह को कब कब याद करें?

अल्लाह को याद करने से हम को क्या मिलेगा?

अल्लाह हमारी हिफाज़त कैसे करता है?

इस हदीस का अंग्रेजी और उरदू में तरजुमा याद करें?

हदीस नं 6

इस हदीस का तरजुमा सुनायें?

इस हदीस का मतन सुनायें?

नेकी किसको कहते है?

क्या किसी की मदद करना नेकी है?

अगर किसी के पास नोट बुक या पेंसिल नहीं है तो हमें क्या करना चाहिए?

कोई नेक काम बतायें?

आदमी नेकी कब करता है?

आप को सब से अच्छी नेकी कौनसी लगती है?

आज आप ने कौनसी नेकी की है?

हदीस नं 7

अल्लाह के रसूल ने खाने से पहले किस बात की तालीम दी?

खाना कौनसे हाथ से खाना चाहिये?

खान कहा से खायें?

बिस्किट कौनसे हाथ से खाना चाहिये?

क्या खड़े हो कर खा सकते है?

हदीस नं 8

बीमारी कौन लाता है?

शिफा कौन देता है?

क्या हर बीमारी का इलाज है?

एक चीज़ है, जिसका कोई इलाज नहीं, वो क्या है?

इस हदीस को तरजुमे के साथ सुनायें?

हदीस नं 9

ज़ुल्म किसको कहते है?

मज़लूम किसको कहते है?

क्या किसी की कापी चुराना ज़ुल्म है?

क्या किसी का कलम तोडना ज़ुल्म है?

क्या किसी की किताब फाड़ना ज़ुल्म है?

किसी को ऐसे ही थप्पड़ मारना क्या है?

किसी को रास्ते में पैर से गिरा देना क्या है?

क्या छोटे बच्चो को मारना ज़ुल्म नहीं है?

हदीस नं 10

अच्छे अखलाख क्या होते है?

कौनसे काम है जिनको आप अच्छा समझते है?

कौनसे काम है जिनको आप बुरा समझते है?

अल्लाह कौनसे कामो से खुश होता है?

अल्लाह कौनसे कामो से गुस्सा होते है?

हदीस नं 11

इस हदीस का तरजुमा याद करें?

इस हदीस का मतन सुनायें?

तोहफे का मतलब क्या है?

तोहफा किसको देना चाहिए?

तोहफा देने से क्या होता है?

हदीस नं 12

सहाबी का मतलब क्या है?

क्या हम सहाबी बन सकते है?

सहाबा को गाली देना कितना बड़ा जुर्म है बतायें?

सहाबी को गाली देने का बुरा अंजाम बतायें?

सहाबी का दर्जा क्या है?

हदीस नं 13

मौत किसको कहते है?

क्या हम सब मरने वाले है?

क्या मौत की तमन्ना कर सकते है?

क्या मौत इत्तेला देकर आती है?

मरने के बाद हम कहाँ जायेंगे?

हदीस नं 14

मजलिस किसको कहते है?

अमानत किसको कहते है?

इस हदीस को याद करें और तरजुमा सुनायें?

क्या हम किसी की बात को दूसरो के सामने बता सकते है?

क्या अमानत सिर्फ पैसो में होती है?

हदीस नं 15

सलाम किसको करें?

क्या जिनको जानते है इन्ही को सलाम करेंगे?

सलाम करने से कितनी नेकियाँ मिलती है?

क्या सलाम का जवाब देना ज़रूरी है?

घर में दाखिल होते वक़्त क्या करना चाहिये?

अगर रास्ते में बड़ो से मुलाक़ात हो तो क्या करें?

मस्जिद में दाखिल होते वक़्त क्या करें?

क्लास में दाखिल होते वक़्त क्या करें?

सवालात बराये इस्लामी आदाब और दुआयें

पीने के आदाब

पीने से पहले क्या पढ़ें?

कौनसे हाथ से पियें?

बायें हाथ से पीना क्यों मना है?

बड़े बरतन को मुंह लगाकर पीना कैसा है?

पानी कितनी सांस में पीना चाहिये?

पानी पीने के बाद क्या कहें?

दूध पीने के बाद क्या पढ़ें?

खाने के आदाब

खाने के चंद आदाब सुनायें?

खाने से पहले क्या पढ़ें?

क्या हम अपने बायें हाथ से खा सकते है?

अपने बरतन में कहाँ से खायें?

अगर शुरू में बिस्मिल्लाह भूल जाये तो क्या करना चाहिये?

खाने के बाद क्या दुआ पढ़ें?

अगर खाने की चीज़ नीचे गिर जाये तो क्या करें?

क्या टेक लगाकर खाना खा सकते है?

सोने और चांदी के बरतन में क्यों न खायें?

सोने के आदाब

सोने से पहले क्या पढ़ें?

क्या सोने से पहले वुज़ू करना है?

क्या सोने से पहले आयतल कुरसी पढ़ना है?

सोते वक़्त कौनसी कौनसी सूरतें पढ़ना चाहिये?

सोकर उठने के बाद क्या पढ़ें?

मस्जिद के आदाब

मस्जिद के कुछ आदाब ज़िकर करें?

मस्जिद में दाखिल होने से पहले क्या पढ़ें?

मस्जिद से निकलते वक़्त क्या पढ़ें?

रोज़ मर्रा की दुआयें

शैतान से पनाह मांगने की दुआ क्या है?

कोई भी काम शुरू करने से पहले क्या पढ़ें?

इल्म में इज़ाफा के लिए क्या पढ़े?

दुनिया और आखिरत की भलाई के लिए क्या पढ़ें?

परेशानी के वक़्त क्या पढ़ें?

वालिदैन के हक़ में क्या दुआ करें?

मुसीबत के वक़्त क्या पढ़ें?

वुज़ू का तरीक़ा समझायें?

सवालात बराये नसीहतें

हज़रत लुख्मान ने अपने बेटे को क्या नसीहत की?

हज़रत लुख्मान ने अपने बेटे को शिर्क से क्यों रोका?

अल्लाह ताला ने इन्सान को किस बात की वसिय्यत की है?

माँ को इतना बड़ा मुखाम क्यों मिला?

क्या माँ बाप का भी शुकर बजा लाना है?

अगर माँ बाप शिर्क का हुकुम दे तो क्या करें?

क्या दुनियवी मामले में माँ बाप की नाफ़रमानी नहीं कर सकते?

हम को लौट कर कहाँ जाना है?

सवालात बराये खिसस

खुश नसीब बच्चा

खिस्से में जिस खुश नसीब बच्चे के बारे में पढ़ा उन का नाम क्या था?

इस वाखिये को बयान करने वाले कौन है?

बच्चे ने कुरआन को किससे याद किया?

जब कुरआन को याद किया था उनकी उमर क्या थी?

बच्चे को सब से ज़्यादा ख़ुशी कब हुई?

कामयाब बाप और नाकाम औलाद का वाखिया

बाग़ वाला अपनी पैदावार का क्या करता था?

बाप के मरने के बाद बच्चो ने क्या मशवरह किया?

जब रात में अपने बाग़ पहुंचे तो क्या देखा?

बाग़ के साथ अल्लाह ताला ने क्या मामला किया?

क्या उन भाइयो को अपनी गलती का अहसास हुआ?

सवालात बराये दीन की अहम् और बुनयादी मालूमात

अरकान इस्लाम क्या है?

अरकान ईमान क्या है?

खबर में कितने सवालात होंगे और वो क्या क्या है?

हमारी पैदाइश का मकसद क्या है?

तौहीद रुबूबियत किसे कहते है?

तौहीद उलूहियत किसे कहते है?

तौहीद अस्मा व सिफात किसे कहते है?

इबादत का क्या मतलब है?

रसूल ﷺ कब और कहाँ पैदा हुए?

सूल ﷺ का बचपन कैसा रहा?

इस्लामी महीनो के नाम क्या है?

तौहीद, रिसालत और आखिरत की अहमियत क्या है?

उसूले सलासा की अहमियत खबर के सवालात की रौशनी में बतायें?

मुख्तलिफ अनावीन पर तक़ारीर बनायें

A) तौहीद
B) मुहम्मद ﷺ का बचपन कैसा था?
C) आखिरत में कौन कामयाब और कौन ना काम?
D) कुरआन याद करने और समझ कर पढने की अहमियत
E) हदीस याद करने और समझ कर पढने की अहमियत
F) आदाब व तहज़ीब इस्लामी की कुछ मिसालें
G) बड़ो का इहतेराम
H) माँ बाप का इहतेराम
I) मिल जुल कर खाने, पीने, खेलने और पढने की अहमियत
J) झूठ का बुरा अंजाम
K) शरारत का बुरा अंजाम
L) बद तमीज़ी का बुरा अंजाम
M) हज की मिठास
N) अच्छे बच्चे के औसाफ
O) सहाबा का बचपन
P) गरीबो की मदद
Q) दुआ की अहमियत
R) मुख्तलिफ दुआयें और अज़कार सुनायें
S) अच्छी लहन में कुरआन सुनायें
T) अरबिक स्टाइल में कुरआन सुनायें
U) माहेर खतीबाना अंदाज़ में खिस्सा सुनायें
V) ड्रामाई अंदाज़ में आदाब बयान करें (दो तीन बच्चे मिलकर)
W) दो बच्चे मिलकर एक दूसरे को नसीहत वाला एक मुकालमा सुनायें
X) उस्ताज़ और मौल्लिम की अहमियत पर तक़रीर करें
Y) इल्म, मदरसा और स्कूल की अहमियत
Z) छोटे बच्चे अपनी हिफाज़त कैसे करें

मौल्लिम गाइड

हर किताब के लिए दो साल की मुद्दत है, जिसमे उसे पढ़ना है| एक किताब के लिए दो साल लगने की कुछ ख़ास वजूहात है, जिनको आप के सामने रखने जा रहे है| चूंके ये किताबें सबाही मसाई मदारिस का ख़याल रख कर बनायी गयी, जहाँ बच्चा अपना पूरा वक़्त नहीं देता, बलके ज़िमनी वक़्त देता है| इसीलिए लम्बा वक़्त दरकार है| पूरी किताब 6 अबवाब में तकसीम की गयी है| हर बाब में कुछ ख़ास बातें है जिनके हुसूल के लिए किताब तरतीब दी गयी है|

रहनुमाई बराये मौल्लिमीन, मौल्लिमात व सरपरस्त

इन दो सालों में क्या ------- हासिल किये जा सकते है?

हर दिन सूरतें, अहादीस और आदाब में से एक एक चीज़ लेकर याद दिलायें|

एक एक आयत का इंतेखाब करे|

तरजुमा हर दिन एक एक आयत का याद दिलायें|

बच्चा जिस ज़बान को अच्छा जानता हो उस ज़बान में पहले याद दिलायें|

बच्चे को मानी समझायें|

एक बाब ख़तम होने के बाद ही दूसरे बाब का आग़ाज़ करें, बलके हर दिन कुछ न कुछ आदाब की बातें लेते रहे ताके मुख्तलिफ चीज़ें एक साथ चलती रहे|

हर हफ़्ता आमोख्ता याद दिलायें|

अगर मुमकिन हो तो हर हफ़्ता एक ---------- बनायीं जाये, इस हफ्ते में जो कुछ याद किया गया है उसको ------ में दोहराये| हर दिन क्लास के आखिर में एक बच्चे के ज़रिये आयत का टुकड़ा या अहादीस का टुकड़ा इज्तेमाई तौर पर दोहराया जाये|

हर बच्चे पर खुसूसी तवज्जो दी जाये|

हर एक की अलग अलग रिपोर्ट तैयार की जाये|

बच्चों को activities base पर पढ़ाया जाये : जैसे कभी कार्ड बोर्ड पर बादल उतारें, दुआ लिखायें, कभी खाने की टेबल उतारें, खाने की दुआ लिखें, कभी पानी का ग्लास उतारें, उस पर दुआ लिखायें वगैरा|

अमली मश्क भी करायें : जैसे क्लास में किसी बच्चे को अमली तौर पर सोने की मश्क करायें, दुआ का मश्क करायें| किसी बच्चे से वज़ू की अमली मश्क करायें वगैरा|

बराये कुरआन

तजवीद : सब से पहले तजवीद सीखें ताके बच्चा पढ़ना और दोहराना सीखें और तलफ्फुज की अदायगी उन्दह हो|

नाज़ेरह में रवानी पैदा हो|

हिफ्ज़ कमा हक्क़ हो|

हिफ्ज़ तरजुमा स लिसानी|

किसी भी माहेर क़ारी के लहन की आदत डालें|

बच्चे की आवाज़ को रिकॉर्ड करें ताके बच्चा अपनी आवाज़ सुने जिससे उसकी मज़ीद हिम्मत अफज़ाई होती रहे|

बराये अहादीस

अरबी ज़बान पढने का तलफ्फुज़ उन्धा किया जाये|

हिफ्ज़ अहादीस

तरजुमा सी लिसानी

पहले हिस्से में बच्चों की उमर का लिहाज़ रखते हुए दो लफ्ज़ी अहादीस को लाया गया है| इसके बाद वाली किताबों में तीन लफ्ज़ी और इसी तरह...|

बराये दुआयें

हिफ्ज़ -----

आदाब

दुआओं का इस्तेमाल

तरजुमा अहादीस मा हवालात|

किसी न किसी ----- या जुलूस में पेश करने के लिए काम आएगा|

बराये नसीहतें

ऐसी ख़ास नसीहतें जो नबी ﷺ ने बच्चों को की थी| इन -------- में तौहीद और तवक्कल का दर्स दिया गया है|

बराये किसस

हमारे माशरे में झूठे किसस का सहारा लिया जाता है, इसलिए सालेह व सालिम ---- का इंतेखाब किया गया है|

बराये दीन के अहम् और बुनयादी तालीमात

तौहीद, रिसालत और आखिरत के मसायेल का तज़किरह किया गया है|